खुश होना है तो तारीफ सुनिए और बेहतर होना है तो निंदा।
– अज्ञात

यह चर्चा उठती रही है

बेहतर होगा कि अध्यक्ष पद के लिए किसी ऐसे व्यक्ति को चुना जाए जिसकी न केवल पार्टी के अंदर बल्कि आंदोलन और राजनीति की अन्य धाराओं में भी स्वीकार्यता हो और जो कांग्रेस को एक बड़े संवाद की धुरी बना सके।

ममता शाह।।

राहुल गांधी के पार्टी अध्यक्ष का पद छोड़ने के बाद से ही कांग्रेस में थोड़े–थोड़े समय पर यह चर्चा उठती रही है कि उन्हें मनाने का प्रयास चल रहा है, या उन्हें मना लिया गया है, या फिर यह कि आज नहीं तो कल अध्यक्ष उन्हें ही बनना है। इससे अलग कोई चर्चा या मांग होती है तो यह कि प्रियंका गांधी को अध्यक्ष पद संभाल लेना चाहिए। एक साल से ज्यादा समय हो जाने के बाद यह पहला मौका है जब राहुल और प्रियंका, दोनों ने एक साथ यह स्पष्ट किया है कि गांधी परिवार से बाहर के किसी व्यक्ति को ही कांग्रेस अध्यक्ष होना चाहिए।

एक पुस्तक के लिए दिए इंटरव्यू में दोनों ने अलग–अलग ढंग से यही बात कही है, हालांकि ये इंटरव्यू साल भर पहले लिए गए हैं। दोनों की यह स्पष्टता अच्छी है लेकिन सवाल यह है कि अगर पार्टी के शिखर पर चीजें इतनी स्पष्ट हैं तो फिर पार्टी को इस दिशा में आगे बढ़ने में इतना वक्त क्यों लग रहा है? इस उलझन को सुलझाने के लिए जरूरी सुराग हमें कांग्रेस के अतीत में मिलते हैं।

इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्री बनने और 1969 में कांग्रेस की टूट के बाद इंदिरा कांग्रेस के नाम से अपनी अलग पार्टी बनाने के साथ ही पार्टी पर उनके पारिवारिक सदस्यों का दबदबा इतना बढ़ गया कि उनकी छाया से बाहर निकल कर अपनी समझ से काम करने वाले किसी पार्टी अध्यक्ष की कल्पना करना भी कठिन हो गया। तब से अब तक 51 वर्षों की इस अवधि में दो अपवादों को छोड़ दिया जाए तो कांग्रेस अध्यक्ष या तो गांधी परिवार का ही कोई सदस्य रहा या फिर देवकांत बरुआ जैसे व्यक्ति, जिन्हें इस परिवार से अलग दिखने की कोई जरूरत ही नहीं थी।

ये दो अपवाद थे पीवी नरसिंह राव और सीताराम केसरी। दोनों के कार्यकाल में पार्टी गांधी परिवार की छाया से बाहर निकलती दिखी, लेकिन गांधी परिवार से नजदीकी का दावा करने वाले नेताओं ने इन दोनों की राह में कांटे बिछाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पद से हटने के बाद दोनों पार्टी में हाशिये पर, बल्कि उससे भी बाहर फेंक दिए गए। ऐसे में गांधी परिवार की ओर से बार–बार स्पष्ट करने के बाद भी कोई इस पद में रुचि नहीं दिखा रहा तो यह स्वाभाविक है। जाहिर है, यह गतिरोध भी गांधी परिवार को ही तोड़ना होगा। उसे अपनी तरफ से सक्रिय पहलकदमी लेकर कांग्रेस में नया अध्यक्ष चुने जाने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना होगा।

इस पार्टी में अनुभवी और व्यावहारिक व्यक्तित्वों की कमी नहीं है। बेहतर होगा कि अध्यक्ष पद के लिए किसी ऐसे व्यक्ति को चुना जाए जिसकी न केवल पार्टी के अंदर बल्कि आंदोलन और राजनीति की अन्य धाराओं में भी स्वीकार्यता हो और जो कांग्रेस को एक बड़े संवाद की धुरी बना सके। इस नाजुक दौर में पार्टी यह बदलाव कर पाती है तो न सिर्फ उसे नई गति मिलेगी, बल्कि समाज की व्यापक लोकतांत्रिक आकांक्षाओं को अभिव्यक्ति का नया जरिया भी मिलेगा।

सहिष्णुता

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। हमें समझना पड़ेगा कि जिन्होंने एक बेहतर कल के लिए 'अपनी' शहादत दी थी, उनके सपनों का मजाक बनाकर हम सिर्फ अपना आज नहीं बल्कि राष्ट्र का भविष्य खराब कर रहे हैं। यह सच है कि स्वतंत्रता मिलने पर व्यक्ति या राष्ट्र के तौर पर हमें अपनी कमियों का पता चलता है, लेकिन एक सच यह भी है कि अगर हम अपनी कमियां देखना ही नहीं चाहेंगे, तो हम खुद में हमेशा 'परफेक्ट' ही दिखेंगे। हमें समझना पड़ेगा कि विचारों के आदान–प्रदान से सत्य को स्थायित्व मिलता है। लेकिन जब विचारों का आदान–प्रदान हो, तो दोनों के मन में यह बात बनी रहे कि अपने विचारों की अभिव्यक्ति का जितना आधार हमें है, उतना ही सामने वाले को भी है। इससे सहिष्णुता बढ़ती है, सम्मान बढ़ता है और दोनों के विचारों से एक समावेशी विचार उत्पन्न होता है, जो एक राष्ट्र के तौर पर 'हमारी' उन्नति में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संपादकीय

बराबर मौका

हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के इतिहास पर सरसरी निगाह डालें तो यहां आजादी के बाद बगैर किसी धार्मिक भेदभाव के सभी प्रतिभाओं को बराबर मौका मिला। दर्शकों ने जब जिसे चाहा, उसे स्टार बनाया। यह सिर्फ संयोग है कि पिछले तीन दशकों में खानत्रयी ने हर पहलू से दर्शकों का मनोरंजन कर उन्हें संतुष्ट किया है। राहुल और प्रेम को पर्दे पर देखते हुए किसी को सुध नहीं रहती कि वह शाहरुख और सलमान को देख रहा है जो मुसलमान हैं। हिंदी फिल्मों में मुख्यतः वृहद हिंदू समाज, परिवार, घरेलू मूल्य, रिश्ते, प्रेम और दायित्व का बोध होता है। उनके नायक अपवाद स्वरूप ही मुसलमान, दलित और वंचित समाज से आते हैं। हिंदी फिल्मों ने भारतीय सामंती समाज, सामाजिक व्यवस्था और वर्गीकरण को अपना लिया है। कई दशकों तक नायक–नायिका का प्रेम ही सबसे बड़ा विद्रोह बना रहा। किरदारों का सारा संघर्ष प्रेमीध्प्रेमिका को हासिल करने तक ही सीमित रहा।

निजी जिंदगी और आचरण में प्रगतिशील मूल्यों में यकीन करने वाले फिल्म बिरादरी के सदस्य भी व्यावसायिक हित में रूढ़िवादी, पारंपरिक, यथास्थितिवादी और फॉर्म्युलाबद्ध कहानियों को प्रश्रय देते रहे हैं। हिंदी फिल्म इंडस्ट्री की मुख्यधारा कमोबेश सदियों से चले आ रहे मूल्य और आदर्श से ही परिचालित रहती है। अब यह कोशिश है कि 'राष्ट्रवाद के नवाचार' का पालन हो और फिल्में घोषित रूप से सत्ताधारी 'राष्ट्रवादी' सोच और नीतियों को कहानी का रूप दें। सत्ताधारी पार्टियां हर दौर में ऐसी कोशिश करती रही हैं।

नेपोटिज्म, भेदभाव और असमान व्यवहार का जबरदस्त चलन है। यह इंडस्ट्री इनसाइडर और आउटसाइडर के दो खेमों में बंटी हुई है। इसी बीच सुशांत सिंह राजपूत की संदिग्ध मौत का मामला सामने आया।

नेपोटिज्म का पैरोकार

अजय ब्रह्मात्मज।।

घरों में बंद देश के नागरिक अभी मीडिया और सोशल मीडिया के जरिये ही बाहरी दुनिया से संपर्क रख पा रहे हैं। गौर करें तो इस दायरे में कोविद–19, बाढ़, मंदी, बेरोजगारी आदि कोई समस्या भारत में है ही नहीं। यहां सबसे बड़ा मुद्दा सुशांत सिंह राजपूत की मौत की गुत्थी है। इसके साथ ही हिंदी फिल्म इंडस्ट्री को घेरने, लांछित और बदनाम करने की कोशिशें भी जारी हैं। इससे यह धारणा विकसित हो रही है कि यह बेहद गलीज इंडस्ट्री है। यहां नेपोटिज्म, भेदभाव और असमान व्यवहार का जबरदस्त चलन है। यह इंडस्ट्री इनसाइडर और आउटसाइडर के दो खेमों में बंटी हुई है। पहला खेमा संगठित, ताकतवर और नियंता की भूमिका निभाता है। दूसरा खेमा अपेक्षाकृत असंगठित और कमजोर होने की वजह से 'रिसीविंग एंड' पर रहता है।

ऊपरी तौर पर ऐसा लगता है जैसे कोई खुला खेल चल रहा है, जबकि चुनने, काटने और छांटने का काम निजी रुचि से और व्यावसायिक हितों को ध्यान में रखकर किया जाता है। कभी 'टैलेंट कॉन्टेस्ट' या अन्य प्रतियोगिताओं के माध्यम से नए चेहरों को बड़ी लॉन्चिंग मिल जाती थी। उसके भी पहले के दौर को याद करें

तो पृथ्वीराज कपूर से लेकर धर्मेंद्र और मनोज कुमार तक किसी न किसी की मेहरबानी, पसंद या सिफारिश से फिल्म इंडस्ट्री में दाखिल हुए। नेपोटिज्म की बात करें तो पहला लिखित उदाहरण पृथ्वीराज कपूर का मिलता है। उन्होंने अपने भाई त्रिलोक कपूर की देवकी बोस से सिफारिश की थी और केदार शर्मा की मदद से इनकार कर दिया था। त्रिलोक कपूर को उनकी फिल्म 'सीता' (1934) में भूमिका मिल गई थी।

करण जौहर के चैट शो में कंगना रनौत ने साहसिक तरीके से उन्हें नेपोटिज्म का पैरोकार कहा था। तब से यह टर्म नए अर्थ के साथ चलन में आ गया है। शुरू में फिल्म इंडस्ट्री के स्थापित चेहरों ने इसका मखौल उड़ाने की कोशिश की, लेकिन इसकी गंभीरता को समझते हुए जल्दी ही वे रक्षात्मक मुद्रा में आ गए। इसी बीच सुशांत सिंह राजपूत की संदिग्ध मौत का मामला सामने आया। शुरू में तनाव और वंचना से पैदा हुई हताशा को वजह बताया गया। बाद में पूरे मामले का नैरेटिव बदलता गया। अभी यह मामला बिहार सरकार की अनुशंसा पर सुप्रीम कोर्ट के आदेश से सीबीआई के पास चला गया है। गौरतलब है कि बाढ़ और कोविड–19 की विभीषिका के बीच बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इस मामले में निजी रुचि के साथ पहल की। इसके अनेक निहितार्थों में से एक बिहार का चुनाव भी लक्षित किया जा रहा है।

फिलहाल हिंदी फिल्म इंडस्ट्री चौतरफा निशाने पर है। जिस ढंग से सोशल मीडिया और चौनलों से निशाना साधा जा रहा है, उसे देखते हुए यह उफान आकस्मिक नहीं लग रहा। सुनियोजित तरीके से मुहिम चल रही है और इनसाइड के लोकप्रिय सितारों और हस्तियों को बेधा जा रहा है। पिछले दिनों 'गुंजन सक्सेना द कारगिल गर्ल' की आईएमडीबीएम की साइट पर की गई 'डाउन वोटिंग' और 'सड़क 2' के ट्रेलर को मिले 'डिसलाइक्स' की बड़ी संख्या साक्ष्य है। रही 'डिसलाइक' की बात तो यह आकलन अभी नामुमकिन है कि 'सड़क 2' को कितने दर्शक मिलेंगे। ओटीटी प्लेटफॉर्म पर कोई बॉक्स ऑफिस तो होता नहीं, जिसके आधार पर दर्शकों के उत्साह या उनकी उदासीनता को आंका जा सके।

सूडोकु नवताल-5452

सरल

		2				1		
				2	5	7	3	
	9	4		6	7			2
	5		4		3			9
	8			9			7	
1			6		8		2	
6			7	4		9	5	
	4	5	8	3				
		8				6		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5451 का हल

9	1	6	2	3	7	4	5	8
8	2	3	4	5	9	1	7	6
4	5	7	1	6	8	3	9	2
5	6	8	7	1	2	9	3	4
1	7	4	9	8	3	2	6	5
2	3	9	5	4	6	8	1	7
7	4	1	8	9	5	6	2	3
3	8	5	6	2	1	7	4	9
6	9	2	3	7	4	5	8	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

समाज का संवैधानिक समर्थन

मोहन। मामले का दूसरा पक्ष यह है कि पिछले 6 सालों से सत्ता पर काबिज पार्टी को बहुसंख्यक हिंदू समाज का संवैधानिक समर्थन मिला है। इस क्रम में समाज का जो हिस्सा सक्रिय हुआ है, उसकी आकांक्षा और चाहत स्पष्ट है। यह उन सितारों को कटघरे में खड़ा कर रहा है, जो सरकारी नीतियों और फैसलों के समर्थन में नहीं दिखते। संगठित ट्रोलिंग और निंदा अभियान चलता है। यह भी कहा जाता है कि वर्तमान सत्ता और देश की लोकप्रिय राजनीति को हिंदी फिल्म इंडस्ट्री की सेक्युलर छवि पसंद नहीं है। हिंदी फिल्मों पर नेहरू युग का प्रभाव स्पष्ट है। इंदिरा गांधी के 20 सूत्री कार्यक्रम पर भी फिल्में बनी हैं। अभी केवल अक्षय कुमार ऐसी थीम की कहानियां चुन रहे हैं और सफल भी हैं। निकट भविष्य में अनेक फिल्में आएंगी, जो भारत सरकार और सत्ताधारी विचारों के कोरस में दिखेंगी और विरोधी सोच तथा विचारों के फिल्मकारों और कलाकारों पर संगठित आक्रमण और तेज होगा।